

# अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

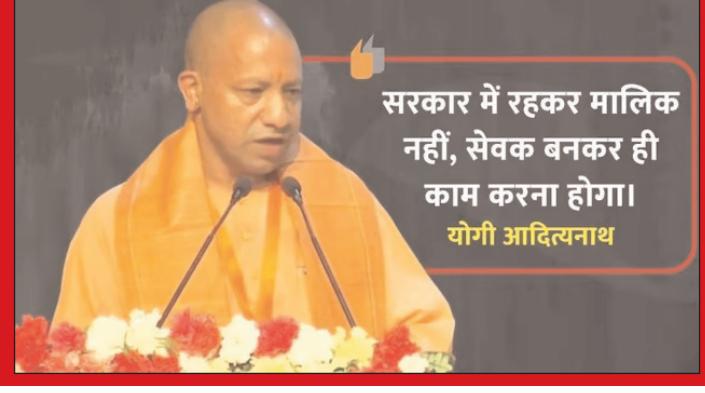
नगर संस्करण प्रयागराज

शुक्रवार 25 मार्च 2022

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दृतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेट

प्रयागराज से प्रकाशित

## थुरू हुआ योगी 'राज' 2.0 योगी आदित्यनाथ को चुना गया विधायक दल का नेता



सरकार में रहकर मालिक  
नहीं, सेवक बनकर ही  
काम करना होगा।  
योगी आदित्यनाथ

## 'सपा की सरकार में राजनीति का अपराधीकरण था'

उत्तर प्रदेश की जनता इससे मुक्ति चाहती थी। 2017 का समय आया और यहाँ की जनता को उससे मुक्ति मिली। सपा सरकार में उद्योगपतियों का सम्मेलन दिल्ली में होता था। व्योगिक कोई भी उद्योगपति लखनऊ आने के लिए तैयार नहीं होता था। सपा सरकार में माफिया और गुंडे पुलिस के मालिक बन बैठे थे। गरीब की एफआरआर लियोगी की हिमत नहीं होती थी। 2017 के बाद जब सत्ता में बदलाव हुआ, तो आप देख सकते हैं गुंडे और माफियाओं की चाल हालत है। उत्तर प्रदेश में ज्यादातर समय राजनीति की तरफ आता है। 2021 को आयोजित पार्टी के कार्यकर्ता सम्मेलन में शाह ने कहा था कि 2024 में नरेंद्र मोदी को प्रधानमंत्री बनाने के लिए 2022 में योगी को फिर से प्रदेश का मुख्यमंत्री बनाना जरूरी है।

सूत्रों के मुताबिक भाजपा के वरिष्ठ नेताओं का मानव है कि बेविज्ञानी राज्यपाल रह चुकी हैं, ऐसे में उन्हें मंत्री बनाने की जगह विधानसभा अध्यक्ष का संविधानिक पद ही देना उचित होगा। शाह ने ही घोषित किया था योगी का नेतृत्व: भाजपा यूपी में विधानसभा चुनाव सीमायोगी के नेतृत्व में लड़ेगी इसकी धोणी सभसे पहले गुरुमंत्री अमित शाह ने ही होती थी। राजदूत के लिए गोपनीयों द्वारा लड़े गए गुरुमंत्री अमित शाह की वाहन शुरू हुए हैं, उस वक्त से उत्तर प्रदेश में योगी सरकार ने काम किया। अगले पांच साल में यूपी के खोले गए गोपनीयों का काम किया जाएगा। उत्तर प्रदेश में ज्यादातर समय राजनीति की अधिकारी ताकि वह अपराधीकरण की तरफ आता है। इसका नतीजा उत्तर प्रदेश की राजनीति में जातिवादी और परिवारवादी पार्टियों का उदय हुआ।

लोगों की आय को दोगुणी करेंगे। प्रदेश को नंबर वन अर्थव्यवस्था का नाम देना उचित होगा। लोगों को आय को दोगुणी करेंगे। प्रदेश को नंबर वन अर्थव्यवस्था का नाम देना उचित होगा।

लोगों की आय को दोगुणी करेंगे। प्रदेश को नंबर वन अर्थव्यवस्था का नाम देना उचित होगा।

## धामी कैबिनेट: यूनिफॉर्म सिविल कोड लागू करने का प्रस्ताव पास



लिए अधिक ऊर्जा से कार्य करेंगे। कहा कि हमने जो संकल्प प्रदेश सरकार जनता की अपेक्षाओं और आकर्षणों को पूरा करने के लिए देख संकल्प बढ़ा दिया। इस अवसर पर

दुप्री अपना आशीर्वाद दिया। राज्य सरकार जनता के समक्ष रखे की देख अवसर पर

की देवतुल्य जनता के समक्ष रखे

थे, उन पर जनता ने सहमति देते

प्रदेश महामंत्री श्री सुरेश भट्ट व सभी कैबिनेट मंत्री उपरिथर रहे। आर्टिकल 44 के तहत राज्य को पावर: वहाँ सीएम धामी ने कहा कि हमने चुनाव से पहले कहा था कि यूनिफॉर्म सिविल कोड लेकर आएंगे। उन्होंने कहा कि पैछले कुछ वर्षों में योगी ने योगी को लिए समान हो जो सभी के लिए समान हो। समाज, विधि विशेषज्ञ को मिलाकर हम एक समिति बनाएंगे। यह कमटी ड्राफ्ट तैयार करेंगी।

सत्ता प्राप्त करना प्रतिशोध का विषय नहीं, जनता के विश्वास पर खरा उत्तरना बड़ी चुनौती थी। हमारी सरकार ने बिना भेदभाव के आम जन तक गरीब

कल्याण की योगी नहीं है। सपा-

बसपा की सरकार में गरीबों के विकास के लिए कोई योगी नहीं थी। हमारी

सरकार ने प्रदेश की जीडीपी को

## तेलंगाना में 7 गुना बढ़ी एमएसपी खरीद: गोयल



लागू होती है। उन्होंने कहा कि तेलंगाना के किसानों को निश्चिह्न हो सकते हैं कि विभिन्न राजनीतिकों के किसानों को गुमराह कर रहे हैं। मैं तेलंगाना सरकार से इसे रोकने का अनुरोध करता हूं।

मैं कुछ राजनेता राज्य के किसानों को गुमराह कर रहे हैं। मैं तेलंगाना सरकार से इसे रोकने का अनुरोध करता हूं।

तेलंगाना में यह 7 गुना बढ़ गया है। वही नीति जो पंजाब पर लागू होती है वह

तेलंगाना और अन्य राज्यों पर भी

तेलंगाना के बीच कोई भेदभाव नहीं है। तेलंगाना

आईपीएल के 2 दिन पहले धोनी ने कैप्टेन्सी छोड़ी, जडेजा को कमान

चैन्स: महेंद्र सिंह धोनी चैन्स

सुपर क्रिकेट के कलानन नहीं होंगे।

उन्हें टीम की कप्तानी छोड़ दी है।

उनकी जगह जडेजा कमान

संभालेंगे। सीएसके ने अपने

टिक्कर अकाउंट पर इस बात की

घोषणा की है। जडेजा 2012 से

चैन्स सुपर क्रिकेट टीम का हिस्सा है।

माहों की कप्तानी में चैन्स ने 4

बार आईपीएल का खिलाव

जीता है। चैन्स टीम ने इस बार

जडेजा और धोनी समेत 4

खिलाड़ियों को रिटेन किया था।

धोनी 14 साल से चैन्स सुपर

क्रिकेट के कप्तान था। ये पहला

मौका है।

देहरादून: पहली कैबिनेट बैठक में पार्टी संगठन ने मुख्यमंत्री एक प्रकार सिंह धामी को सरकार का दृष्टि पर सौंपा। प्रदेश अव्यक्त मदन कौशिक और प्रेस माहमंत्री अदेव कुमार ने सीएम को दृष्टि पर सौंपा। इस दौरान प्रदेश अव्यक्त मदन कौशिक ने कहा कि जनता ने भाजपा और भाजपा के दृष्टि पर सौंपा किया है और सरकार उस पर भरी तरह से खरी उत्तरणी। उन्होंने कहा कि युवा योगी के नेतृत्व में मैत्रिमंडल के सदस्य राज्य को तरकीकी की दिशा में ले जाएंगे।

कहा कि योगी ने योगी को लिए अधिक ऊर्जा से कार्य करेंगे।

कहा कि हमने जो संकल्प प्रदेश सरकार जनता की अपेक्षाओं और आकर्षणों को पूरा करने के लिए देख संकल्प बढ़ा दिया। इस अवसर पर

की देवतुल्य जनता के समक्ष रखे

थे, उन पर जनता ने सहमति देते











## संपादकीय

# आप का बढ़ता कद माजपा के लिये खतरे की घंटी

आम आदमी पार्टी ने दिल्ली के बाद पंजाब में प्रचण्ड जीत का कीर्तिमान स्थापित कर राजनीति का गणित ही बदल दिया। उसने राजनीति की एक नयी परिभाषा एवं मानक गढ़ते हुए पंजाब में कांग्रेस को बुरी तरह रौदा। 117 में 90 सीटों पर कज्जा किया है। पंजाब में आप से करारी हार भले ही कांग्रेस को मिली हो, लेकिन यह भारतीय जनता पार्टी के लिये बड़ा चिन्ता का कारण बनना चाहिए। क्योंकि यह जीत एक चुनौती है। उधर देश की जनता ने इस बार पंजाब के विधानसभा चुनाव में जो जनादेश दिया है उसके सब अलग-अलग रूप में देख रहे हैं। समीक्षक अपने-अपने चश्मे के अनुसार विश्लेषण कर रहे हैं। पर एक बात स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आई है कि देश की जनता की कमजोर नज़र को अवरिद्ध के जरीवाल ने कसकर पकड़ लिया है, मुफ्त बिजली और पानी आदि की उनकी घोषणाओं ने भूचाल ला दिया है। आप भाजपा के लिए भविष्य में चुनौती बनती नजर रही है। क्योंकि, जिस प्रकार उसकी चुनावी सफलता की गति तेज और तीक्ष्ण होती जा रही है, उससे तो यही लगता है बस, अब कुछ दिनों की बात है। देश में यदि भाजपा सतर्क नहीं हुई तो आम आदमी पार्टी को केंद्रीय सत्ता के करीब आने से रोक पाना मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन हो जाएगा। भाजपा यह कहकर की पंजाब तो पहले भी हमरा नहीं था, इस बार भी नहीं हुआ, लेकिन आप जैसी नई पार्टी जब इतनी अधिक सीटों से जीत हासिल कर सकती है तो भाजपा क्यों नहीं? यह भाजपा के लिये आत्म-चिन्तन का विषय है। कांग्रेस ने तो अपना सूपड़ा साफ कराने की ठान ही रखी है, अतः उसकी इस शर्मनाक हार से वह क्या सबक लेगी? सबसे पुरानी और देश पर सर्वाधिक समय शासन करने वाली सबसे सशक्त माने जाने वाली कांग्रेस इस चुनाव में बहुत पिछड़ गई है, उसके दुबारा खड़े होने की संभावनाएं भी धूधली होती जा रही है। कांग्रेस अपने गठन के बाद से अब तक कई बार टूटी, खिखरी, हारी लेकिन हर बार अधिक तेजस्वी एवं ताकतवर बनकर उभरी, देश में अपना राजनीतिक वजूद काथय रखती रही है। लेकिन नरेन्द्र मोदी ने जब से कांग्रेस मुक्त भारत का नारा दिया है, उसका वर्चस्व एवं स्वीकार्यता लगातार गिरती जा रही है। ऐसा क्यों हुआ? क्या और कहां कमियां रहीं? इन पर मंथन के लिए कांग्रेस कार्यसमिति की पिछले दिनों की बैठक में तरह-तरह के मुद्दों पर विवरण हुआ और इस चुनाव में हार तथा उसके गिरते प्रदर्शन के महत्वपूर्ण कारणों का पता लगाने का प्रयास किया गया। उसका यह विचार-मंथन व्यर्थ है, क्योंकि इस और पूर्व की हार एवं कमजोर प्रदर्शन का एकमात्र कारण गांधी परिवार एवं राहुल गांधी है। जी 23 ग्रुप के तीव्र विरोध एवं हमलों के बावजूद गांधी परिवार के चाढ़कारा शीर्ष नेताओं ने राहुल को हार का कारण मानने से सिरे से खारिज कर दिया। हालांकि, स्वयं सेनियर गांधी ने कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक में प्रस्ताव रखा था कि यदि पार्टी को ऐसा लगता है तो वह खुद दोनों संतानों- राहुल गांधी और प्रियका गांधी के साथ पार्टी पद से हटने के लिए हमेशा तैयार है। आप का देशव्यापी बढ़ता वर्चस्व लोकतात्रिक दृष्टि से उपयोगी एवं प्रासांगिक है। लेकिन किसी भी राजनीतिक दल का एक तरफा वर्चस्व लोकतंत्र के लिये उचित नहीं माना जा सकता है। उन्नत एवं आदर्श लोकतंत्र वही माना जाता है जो संकीर्ण एवं सीमित दायरों में नहीं बंधता।

# जी-23: सत्ता से वनवास है असल समस्या

तनवीर जाफरी

## देश इस समय सांप्रदायिक

ध्रुवीकरण के साथ साथ झूट और  
दुष्प्रचार के दुर्भाग्यपूर्ण दौर से  
गुजर रहा है। मीडिया सहित  
अनेक सरकारी संस्थायें सत्ता के  
समक्ष दण्डवत हैं। अपने  
विपक्षियों को डरा धमकाकर या  
लालच देकर उन्हें या तो अपने  
पक्ष में किया जा रहा है या  
खामोश किया जा रहा है। कांग्रेस  
इस समय एक ऐसे अभूतपूर्व  
चुनौती काल से गुजर रही है  
जिसमें पूरी कांग्रेस को एक मुट्ठी  
की तरह एकजुट होने तथा अपने  
कुबे का विस्तार करने की  
जरूरत है न कि पार्टी छोड़ने के  
लिये नये नये बहाने तलाशने की।  
कांग्रेस में आज भी गाँधी नेहरू  
परिवार के सिवा भीड़ इकट्ठी  
करने वाला कोई नेता नहीं है।  
परन्तु जिन्हें सत्ता हासिल करने  
की जल्दी है उन्हें नित नये बहाने  
तलाशने से भी कोई रोक नहीं  
सकता। हकीकत तो यही है कि  
नेहरू गाँधी परिवार का नेतृत्व  
नहीं बल्कि सत्ता से वनवास है  
बगावती सुर बुलंद करने वाले  
नेताओं की असल समस्या

पिछले दिनों देश के पांच राज्यों में हुये विधानसभा चुनावों में कांग्रेस के अन्यअपेक्षित प्रदर्शन के बाद पार्टी में घमासान मचा हुआ है। साफ शब्दों में कहा जाये तो जिन 'पैराशूट' नेताओं ने सारी जिंदिगी नेहरू-गाँधी परिवार के नेतृत्व उनकी लोकप्रियता तथा उनके राष्ट्रीय जनाधार की बदौलत सत्ता सुख भोग उन्हीं में से अनेक नेता कांग्रेस की सत्ता में यथाशीघ्र वापसी न होती देख अब उसी नेहरू-गाँधीपरिवार के नेतृत्व पर सवाल उठाने लगे हैं। वे यह भूल जाते हैं कि देश की वर्तमान साम्प्रदायिक धूवीकरण की राजनीति, इसुठ व लांडिन के दौर ने कांग्रेस की धर्मनिरपेक्ष व गांधीवादी राजनीति को ही हाशिये पर डाल दिया है। परन्तु जिन नेताओं को शीघ्र सत्ता चाहिये वे कांग्रेस के सिद्धांतों की तिलांजलि देकर किसी न किसी बहाने से या तो पार्टी छोड़ कर सत्ताधारी पार्टी में समाहित हो चुके हैं या नेतृत्व के विरुद्ध मुखर होकर पार्टी छोड़ने के बहाने तलाश रहे हैं। जहाँ तक नेहरू गाँधी परिवार द्वारा लिये गये कुछ ऐसे फैसलों का प्रश्न है जिनसे कथित रूप से कांग्रेस को अतीत में नुकसान होता रहा है उदाहरण के तौर पर नवज्योत सिंह सिद्धू को पंजाब प्रदेश कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया जाना अथवा कैप्टेन अमरेंद्र सिंह को मुख्य मंत्री पद से मुक्त करने का फैसला देर से लेना आदि तो इस तरह के फैसले भी सोनिया अथवा राहुल गाँधी द्वारा अकेले नहीं लिये गये। इस परिवार में शीर्ष पर हमेशा कोई कोई न कोई सलाहकार रहे हैं। जिनकी सलाह व कांग्रेस के विषय नेताओं के सलाह मशविरे से ही ऐसे कदम उठाये जाते हैं। परन्तु जब पंजाब की जनता ने ही राज्य में तीसरी राजनीतिक शक्ति के रूप में भरपूर समर्थन देने का मन ही बना लिया हो तो उसमें पार्टी नेतृत्व कर ही क्या सकता है? जी 23 कहे जाने वाले नेताओं के गुट में सबसे मुखर नाम गुलाम नबी आजाद का है। कांग्रेस में शुरू से ही इन्हें बिना जनाधार वाला परन्तु गाँधी नेहरू परिवार का वफादार नेता समझा जाता रहा है। कहना गलत नहीं होगा कि यह उस समय भी राजीव गाँधी के खास सलाहकारों में गिने जाते थे जब बोफोर्स के झूठे आरोपों का



इल्ल दिन उप आ चु प्रत इल्ल के उम्म इन्ह ऐस स्कू दौग राज वो गये प्रव सब का ला मेह सा चन संग उम्म मि

योग्यता ही क्या है। परन्तु सत्ता से दूर रहने की बेचैनी में 'सूप तो सूप छलनी भी बोलने लगी हैं'? नरेंद्र मोदी के कार्यकाल में जितनी सशक्त व मुख्य विरोध की भूमिका राहुल गांधी व प्रियंका गांधी ने निर्भाई है इतना मुख्य विरोध करते देश का कोई नेता नहीं दिखाई दिया। कई बार इनके विरोध ने सत्ता को बैकफूट पर जाने के लिये भी मजबूर किया है। हम दो हमारे दो का कटाक्ष हो या चौकीदार पर प्रहार, राफेल सैदे का विरोध हो या पेगासेस का प्रबल विरोध, ऐसे तमाम मुद्दों को संसद से सड़क तक अपनी पूरी क्षमता व सामर्थ्य के अनुसार राहुल गांधी ने उठाया है। पिछले चुनाव में मोदी और उनके कई नेताओं ने जनता से 'नमक' के बदले वोट माँगा जिसपर प्रियंका गांधी ने ऐसी झाड़ लगाई कि मोदी फौरन बैकफूट पर आ गये और चुनावी सभा में यह बोलते नजर आये कि 'नमक आपने नहीं नमक तो आपका मैंने खाया है'। यह साहस और हिम्मत के बल इसी परिवार के सदस्यों में देखा जा सकता है। इन्हें कोई पद्धतिशी या पद्ध भूषण अथवा मंत्री या मुख्यमंत्री का पद कांग्रेस व उसके सिद्धांतों से विमुख नहीं कर सकता।

देश इस समय सांप्रदायिक ध्रुवीकरण के साथ साथ झूठ और दुष्प्रचार के दुर्भाग्यपूर्ण दौर से गुजर रहा है। मीडिया सहित अनेक सरकारी संस्थायें सत्ता के समक्ष दण्डवत हैं। अपने विपक्षियों को डरा धमकाकर या लालच देकर उन्हें या तो अपने पक्ष में किया जा रहा है या खामोश किया जा रहा है। कांग्रेस इस समय एक ऐसे अभूतपूर्व चुनौती काल से गुजर रही है जिसमें पूरी कांग्रेस को एक मुड़ी की तरह एकजुट होने तथा अपने कुंबे का विस्तार करने की जरूरत है न कि पार्टी छोड़ने के लिये नये नये बहाने तलाशने की। कांग्रेस में आज भी गांधी नेहरू परिवार के सिवा भीड़ इकट्ठी करने वाला कोई नेता नहीं है। परन्तु जिन्हें सत्ता हासिल करने की जल्दी है उन्हें नित नये बहाने तलाशने से भी कोई रोक नहीं सकता। हकीकत तो यही है कि नेहरू गांधी परिवार का नेतृत्व नहीं बल्कि सत्ता से बनवास है बगावती सुर बुलांद करने वाले नेताओं की असल समस्या।

# हिंसा के चरम पर पाश्चम बगाल

## में राजनीतिक

हिंसा की जड़ें अत्यत गहरी हैं। कांग्रेस, वामपंथी या तृणमूल, सत्ता किसी की रही हो, इन दलों की राजनीतिक संस्कृति हिंसा का ही पर्याय रही है। बीते साल हुए विधानसभा चुनाव में और इसके पहले पंचायत चुनाव में खबर हिंसा की वारदातें देखने में आती रही हैं। बीरभूम जिले के रामपुरहाट में तृणमूल कांग्रेस के एक नेता भादू शेख की हत्या के बाद करीब एक सैकड़ा बाइक सवार हथियारबद आतायी रामपुरहाट पहुंचे और घरों के दरवाजे बाहर से बंद कर आग लगा दी, जिसमें दस लोग जिंदा जलकर राख हो गए। जब राज्य सरकार उचित कानूनी कार्रवाई करते नहीं दिखी तब कलकत्ता हाईकोर्ट ने कठोर रुख अपनाते हुए मामले को स्व-संज्ञान में लिया और चौबीस घंटे में घटना की रिपोर्ट मांगी। साथ ही अग्निकांड में घायल एक नाबालिग सहित अन्य घायलों की सुरक्षा तय करने की हिदायत दी, ताकि इन चम्पदाद गवाहों के बयान दर्ज किए जा सकें। उपचार, सुरक्षा और मृतकों के शवों के वीडियो रिकॉर्डिंग भी कराए जाने के निर्देश दिए गए हैं। चूंकि निर्दोष महिला और बच्चे भी इस नरसंहार में मारे गए हैं, लिहाजा राष्ट्रीय महिला आयोग और राष्ट्रीय बाल अधिकार संगठन आयोग भी सक्रिय हुए और पुलिस से कानूनी कार्रवाई की रिपोर्ट तलब की है। प्रधानमंत्री नेंद्र मोदी ने भी इस घटना पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए राज्य सरकार को हर प्रकार की मदद देने का भरोसा दिया है। यह नरसंहार इतना वीभत्स था कि

न्यायालय में कहना पड़ा कि ह्याएँ सुलभतम घटना पर मैं राज्य का नागरिक होने पर शमिद्दा हूँ। अतएव मैं उस गांव का निवासी होता तो कुछ दिनों के लिए पलायन कर जाता ह्या हिंसा में मारे गए लोगों के परिजनों का कहना है कि रामपुर हाट के तृणमूल कांग्रेस अध्यक्ष अनारूल हुसैन के उकसाने पर इस वारदात को अंजाम दिया गया है। पीडित और हत्यारों के नाम उजागर होने पर भाजपा की बंगाल राज्य सचिव लॉकेट चर्टर्जी ने कहा है ह्याअब बंगाल कश्मीर की राह पर चल रहा है। यदि यही हालात रहे तो बंगाल कश्मीर में बदल जाएगा। अतएव इस मामले की सीबीआई और एनआईए से जांच अनिवार्य है ह्या भाजपा अध्यक्ष सुकांत मजुमदार की मारने तो इस राज्य में एक सपाह के भीतर 26 लोगों की हत्याएँ हुई हैं, जिनमें राजनेता भी शामिल हैं। साफ है, बीरभूम की घटना और अन्य घटनाओं की पृष्ठभूमि में राजनीतिक एवं सांप्रदायिक संघर्ष अंतर्रानिहित है। दरअसल यह घटना विधानसभा के चुनाव के समय और उसके बाद हुई हिंसक घटनाओं की कड़ी का ही एक हिस्सा है। पिछले साल हुए विधानसभा चुनाव के परिणाम आने के बाद भी प्रदेश में जगह-जगह हिंसा भड़की थी, जिनमें 16 लोग मारे गए थे। इसलिए यह आशंका भी जताई जा रही है कि हिंसा की यह इवारत चुनावी प्रतिक्रिया स्वरूप लिखी गई है। यह असहिष्णुता पंचायत, निकाय, विधानसभा और लोकसभा चुनावों में एक स्थाई चरित्र के रूप में मौजूद रहती है। विंडबंना ही कहा

दनानम राज्य बिहार और उत्तर प्रदेश इस हिंसा से मुक्त हो रहे हैं, तब बंगाल और केरल में यह हिंसा बेलगाम होकर सांप्रदायिक रूप में दिखाई दे रही है। बाद रहे इसी कड़ी में भाजपा विधायक देवेंद्रनाथ की हत्या कर लाश सार्वजनिक स्थल पर टांग दी गई थी। देवेंद्रनाथ माकपा से भाजपा में शामिल हुए थे। बंगाल में वामदल असें से खुनी हिसा के पर्याय बने हुए हैं। इन हिंसक वारदातों से पता चलता है कि बंगाल पुलिस तुण्मूल कांग्रेस की कठपुतली बनी हुई है। दरअसल बंगाल ने हिंसा को राजनीतिक-सांस्कृतिक परंपरा मान लिया है। यह हिंसा राष्ट्रवादी क्रांतिकारियों ने जहां अंग्रेजों से मुक्ति के लिए अंजाम तक पहुंचाई वहाँ चारू मजूमदार और कानून सान्ताल जैसे नक्सलवादियों ने इसे सामतामूलक हितों के लिए अपनाया था, किंतु बाद में यह आर्थिक हित साधने और राष्ट्रविरोधी गतिविधियों से जुड़ गई। देश में हिंसा भड़काने के लिए नक्सलवादियों को बांग्लादेश और चीन से धन व हथियारों की मदद मिलती रही है। पश्चिम बंगाल में जब बांग्लादेशी मुस्लिमों की घुसपैठ बढ़ गई और इनका कांग्रेस, वामपंथ और तुण्मूल कार्यकर्ताओं के रूप में राजनीतिकरण हो गया, तब ये राजनीतिक गुटों की शत्रुता को सांप्रदायिक हिंसा में बदलने लग गए। जहां-जहां इन घुसपैठियों का संचाल बल बढ़ता गया, वहां-वहां इन्होंने स्थानीय मूल हिंदू बंगालियों की संपत्ति हड़पकर उन्हें बेदखल करना शुरू कर दिया।

# आभेव्याकृत

## ਪੰਜਾਬ ਮੈਂ ਆਪ ਕੇ ਮਾਨ ਕੇ ਲਿਯ ਸਤਾ ਕਿਤਨਾ ਆਸਾਨ ?

देश के सबसे नवोदित राजनैतिक दल 'आम आदमी पार्टी' ने राजधानी दिल्ली की राज्य की सत्ता पर कब्जा जमाने के बाद अब देश के सबसे समृद्ध व संपन्न समझे जाने वाले राज्य पंजाब के विधानसभा चुनावों में ऐतिहासिक जीत दर्ज कर देश के राजनैतिक पंडितों को हैरत में डाल दिया है। आश्र्य की बात तो यह है कि 'आप' ने अपने चुनाव निशान के नाम व काम को सार्थक करने वाले 'झाड़ू फेरने' के मुहावरे को जिस तरह पूर्व में दिल्ली के चुनावों में साकार किया था अपने विरोधियों पर लगभग उसी तरह की 'झाड़ू फेरने' वाली जीत पंजाब में भी दर्ज की है गौरतलब है कि 'आम आदमी पार्टी' ने 2015 में दिल्ली की कुल 70 विधानसभा सीटों के विधानसभा चुनाव में 54.34 प्रतिशत मत हासिल करते हुये 67 सीटें जीत कर कांग्रेस व भाजपा जैसे राष्ट्रीय दलों के जोरदार झटका दिया था। इस चुनाव में भाजपा मात्र 3 सीटें ही जीत सकी थीं जबकि कांग्रेस पार्टी के तो 63 प्रत्याशियों की जमानत भी जब्त हो गयी थी। उसी तरह 2020 के दिल्ली विधानसभा चुनाव में भी आम आदमी पार्टी ने 62 सीटें हासिल की थीं जबकि भारतीय जनतापार्टी को केवल 8 सीटों पर जीत हासिल हुई थी। 2020 में भी दिल्ली में कांग्रेस एक भी सीट नहीं जीत सकी थी। 2015 व 2020 के चिनवों में स्वयं प्रदानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी

की थीं। लगभग दिल्ली जैसा प्रदर्शन पंजाब में भी दोहराते हुये आम आदमी पार्टी ने यहाँ भी अन्य सभी राष्ट्रीय व क्षेत्रीय दलों के अरमानों पर पूरी तरह से 'झाड़ू फेरते' हुये पंजाब विधान सभा की कुल 117 सीटों में से 92 सीटें पर अपनी विजय पताका फहराई है। सत्ता में रही कांग्रेस पार्टी को मात्र 18 सीटों पर जीत हासिल हुई जबकि राज्य में शासन करने वाले एक और प्रमुख राजनैतिक दल अकाली दल को मात्र 4 सीटों पर ही संतोष करना पड़ा है। आप ने राज्य के सभी वर्तमान-निवर्तमान मुख्य व उप मुख्य मणियों व दिग्गजों को भी बुरी तरह पराजित कर दिया है। आम आदमी पार्टी ने इस चुनाव में अपने मुख्यमंत्री के चेहरे के रूप में पार्टी के दो बार सासद रह चुके भगवंत मान को पेश किया था। भगवंत मान ने हालांकि आम आदमी पार्टी से अपने जीवन के राजनैतिक सफर की शुरुआत तो जरूर की है परन्तु राजनीति में पदार्पण से पूर्व भी वे पंजाब ही नहीं बल्कि एक विश्वस्तरीय हास्य कलाकार (कॉमेडियन) के रूप में अपनी पहचान बनाये हुये थे तथा एक सेलेब्रेटी के रूप में ही जाने जाते थे। उधर सासद चुने जाने के बाद लोकसभा में आप का प्रतिनिधित्व करते हुये उन्हें जितनी बार भी लोकसभा में बोलने का मौका मिला उन्होंने अपने काव्य शैली के चुटीते अंदाज में कई बार व्यंग्य पूर्ण कवितायें सुनाकर न केवल सत्ता पर विचारधारा से भी अवगत कराया। मान अपने सांसद काल के दौरान न केवल अपने संसदीय क्षेत्र में जमीनी स्तर पर जनसमस्यों के समाधान करने को लेकर सक्रिय रहे बल्कि इस दौरान उन्होंने पूरे पंजाब का दौरा कर संगठन को भी राज्य स्तर पर मजबूती प्रदान की। अब आम आदमी पार्टी के पक्ष में पंजाब में चली इस सुनामी को चाहे इस ढंग से परिभाषित किया जाये कि यह आप द्वारा मतदाताओं के लिये खोले गये 'मुक्त के पिटरे' का कमाल है अथवा यह कहा जाये कि राज्य की जनता कांग्रेस व शिरोमणि अकाली दल (बादल) की पारंपरिक राजनीति से ऊब चुकी थी, अथवा आप को मिला प्रचंड बहुमत पंजाब को नशा मुक्त कराने के आप विशेषकर भगवंत मान के बादें पर विश्वास करने का नीजा है ? या फिर इसे अरविन्द केजरीवाल के दिल्ली शासन से प्रभावित होकर पंजाब के मतदाताओं द्वारा लिया गया अभूतपूर्व निर्णय माना जाये अथवा शिक्षा, स्वास्थ्य, विकास, रोजगार गोया सुशासन के लिए दिया गया जनादेश ? अथवा इसे उपरोक्त सभी परिस्थितियों का मिला जुला परिणाम कहा जाये परन्तु निश्चित रूप से मात्र आठ वर्ष पहले जन्मी पार्टी के हाथों एक समृद्ध व संवेदनशील कृषि प्रमुख राज्य की सत्ता सौंप कर पंजाब वासियों ने आम आदमी पार्टी से काफी उम्मीदें जरूर लगा रखी हैं।

# रूस-यूक्रेन युद्ध की समाप्ति का माध्यम बने अहिंसा यात्रा

**ललित गर्ग**  
**रूस-यूक्रेन युद्ध को चलते हुए**  
**होने जा रहा है। रूस वांछित न**  
**कर पाया है। जैसे-जैसे समय बी**  
**विनाश एवं विध्वंस की संभावन**  
**है। यूक्रेन और रूस में शांति व**  
**अभ्य का वातावरण, शुभ की व**  
**का फैलाव करने के लिये भारत**  
**करने चाहिए। एकमात्र भारत ही**  
**अपने आध्यात्मिक तेज एवं अर्थ**  
**मनुष्य के भयभीत मन को युद्ध**  
**मुक्ति दे सकता। इन दोनों देशों द**  
**लिये राजी करके विश्व को निर्भ**  
**इन युद्ध एवं हिंसा के वातावरण में**  
**उसके प्रणीता आचार्य श्री महा**  
**कारगर हो सकता है। क्योंकि रा**  
**महाश्रमण कीर्तिधर यायावर संत**  
**अपनी अहिंसा यात्रा के माध्यम से**

भारत की बलिक पडौसी देश नेपाल, भूटान पदयात्रा की है और अहिंसा एवं अयुद्ध का प्रभावातावरण निर्मित किया। गांव-गांव, नगर-नगर प्रांत-प्रांत एवं निकट के लेखों में घूमते हुए उन्हें अहिंसा, अयुद्ध, साम्रादायिक सौहार्द, मैत्रि समन्वय, राष्ट्रीय एकता, एवं सद्ब्दाव की प्रतीक करने में अपूर्व एवं ऐतिहासिक योगदान दिया है तथा लाखों-लाखों लोगों से सोधा सम्पर्क स्थापित हुआ है। उन्हें अहिंसक बनने, साम्रादायिक सौहार्द स्थापित करने एवं व्यसनमुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी गई है। उनके इस चैरैवेति-चैरैवेति जीवनक्रम एवं संकलनों को देखकर सहसा वेदमंत्र - ह्यापश्य सूर्यस्य त्रेमायो न तन्द्रयते चरन्त्वं की सृष्टि हो उठी है अर्थात् त्रिविक्राताल से भ्रमण कर रहा है, पर कभी थवा नहीं, चलता ही जाता है।

बात केवल रूस-यूक्रेन युद्ध की ही नहीं है बल्कि देश के भीतर घटित हिंसा के ताण्डव की भी जबकि अहिंसा सबसे ताकतवर हथियार है, बल्कि

कि इसमें पूरी ईमानदारी बरती जाए। लेकिन देश में किसान आन्दोलन हो या ऐसे ही अन्य राजनीतिक आन्दोलन, उनमें हिंसा का होना गहन चिन्ता का कारण बना है। हिंसा, नक्सलवाद और आतंकवाद की स्थितियों ने जीवन में अस्थिरता एवं भय व्याप्त कर रखा है। अहिंसा की इस पवित्र भारत भूमि में हिंसा का ठांडव सोचनीय है। महावीर, बुद्ध, गांधी एवं आचार्य तुलसी के देश में हिंसा को अपने स्वार्थपूर्ति का हथियार बनाना गंभीर चिंता का विषय है। इस जटिल माहात्मा में आचार्य श्री महात्रमण द्वारा अहिंसा यात्रा के विशेष उपक्रम के माध्यम से अहिंसक जीवनशैली और उसके प्रशिक्षण का उपक्रम और विभिन्न धर्म, जाति, वर्ग, संप्रदाय के लोगों के बीच संपर्क अभियान चलाकर उन्हें अहिंसक बनने को प्रेरित किया जाना न केवल प्रासारणक रहा है, बल्कि राष्ट्रीय जीवन की बड़ी आवश्यकता थी। इन प्रयत्नों का विश्व की महाशक्तियों एवं उनकी हिंसक मानसिकता पर भी व्यापक प्रभाव देखने को मिला एवं असंख्य लोगों ने अहिंसक जीवन का संकल्प लिया, जिसका प्रभाव विश्वव्यापी हुआ। आचार्य श्री महात्रमण की अहिंसा यात्रा धर्म की यात्रा बनी, अहिंसा एवं अयुद्ध की यात्रा बनी, मैत्री यात्रा बनी, प्रेम एवं अपनत्व की यात्रा बनी, नशामुक्ति की यात्रा बनी, सम्प्रदायिक सौहार्द की यात्रा बनी, समता एवं समन्वय की यात्रा बनी, जीवनमूल्यों की यात्रा बनी एवं सेवा-परोपकार की यात्रा बनी। भाषा, रंग, सम्प्रदाय एवं भैगेलिकता में बंटी मानव जाति की एकता को सुनिश्चित करना ही इस यात्रा का उद्देश्य रहा है। इसनामों को आपस में तोड़ने नहीं, बल्कि जोड़ने के लिये इस यात्रा ने ऐतिहासिक भूमिका निभाई। विशेषतः अहिंसक शक्तियों को संगठित किया गया। क्योंकि अहिंसा ताकतवरों का हथियार है। दमनकारी के खिलाफ वही सिर उठाकर खड़ा हो सकता है, जिसे कोई डर न हो, जो अहिंसक हो एवं मूल्यों के लिये प्रतिबद्ध हो।

घर घटे। वह छव्य अमरता का भूतियापा जब किसी के सिर पर चढ़ जाता है तो वह उसे भूखा नंगा और दंगाई बनाकर छोड़ता है। अमरता की चाथी और भूतियापा का ताला मानो एक दूसरे के लिए बने हैं। जो इंसान बुखार में भी अमरता का स्वास्थ चाहता है वही सबसे जुनूनी कहलाता है। अब आपको क्या बताएं यहाँ अमरता प्राप्ति के लिए कौन-कौन, क्या-क्या और कैसे-कैसे जुगाड़ लगा रहा है। यहाँ अजीब होड़ लगी है। यहाँ जीतने के लिए दौड़ने की नहीं गिराने की जरूरत पड़ती है। अमरता की पागलपंती के लिए कोई लिख लिखकर बाबला हुए जा रहा है तो कोई होडिंग, पोस्टर, ब्राउचर तो कोई पंपलेट पर लेट लेट कर अपनी हंसती छवि में खुद को पहुंची ही हस्ती सिद्ध करने में मरा जा रहा है। कोई भगवान के नाम पर चंदा तो कोई चंदे के नाम पर भगवान का धंधा कर रहा है चंदे के धंधे में अमरता के पदयात्रा कर रहा है तो कोई कुर्सी पाने के लिए कुर्सासन रहा है। कोई तुक्रके के नाम पर बेतुकी बातें कर रहा है तो कोई तन मन धन की बात कर रहा है। सब के सब अमरता के भूतियापा में आकंठ दबे हुए हैं। अमरता की इमरती के लिए कोई भैष बदलकर अवतारी बनने पर तुला है तो कोई अपनी ताकत के पेपरवेट के नीचे कागज सरीखे लोगों को दबाए रखा है। कुछ अपने मत के पथ पर तो कुछ पथ के मत पर अड़े हुए हैं। इनकी सार्वभौमिकता आतंक का पर्याय है। नैतिकता से शून्य अमरत्व पिपासु मूल्यों पर लंबी लंबी फेंके जा रहे हैं। गुरु की गुरुताई और चेले की धूरताई एक दूसरे पर भारी पड़ रही है। वेद पुराण उपनिषद का ज्ञान इन के लिए बनलाइनर बनकर रह गया है। नौजवान दुनिया में अमरता का खेला बुद्धिजीवी खेले जा रहे हैं। दिन को रात और रात को दिन बताए जा रहे हैं।



